कैरियर की बात – "उद्योग संचेतना" के साथ

वर्ष 12 – अंक 03
फाल्गुन – 2082 वि.

Udyog Sanchetana means awareness of Industry, Technology, and Startup Opportunities.

Started as a **FREE** Monthly publication in April 2014, it completed 11 years in March 2025.

Available on Udyog Sanchetana page of LinkedIn, and **उद्योग संचेतना** page Facebook, our objective is to reach every student, teacher and parents.

You may like to Support us through the QR code -

For feedback write to -
ispatbharti@gmail.com

इस अंक में -

- **कौन बनेगा करोड़पति**
- **चलो आई आई टी चलें**
- **मिस्टर चौधरी बने IITian**
- **अनिल मणिभाई नाइक**

सम्पादक की कलम से – मानसिक रोग !

शिक्षा क्षेत्र में कुछ शब्द बहुत इस्तेमाल हो रहे हैं - **तनाव**, **बेरोजगारी**, **प्रतिस्पर्धा**, **मानसिक रोग**, **आत्महत्या** आदि।

चोट लगती है तो दिखती है, शरीर के किसी भाग में दर्द हो तो महसूस होता है, किन्तु मानसिक रोग का कोई **लक्षण जल्दी दिखता** नहीं।

कहते हैं 60 से 80 प्रतिशत युवा आबादी मानसिक रोगसे प्रभावित है, विशेषकर छात्रों और 35 वर्ष तक के युवा। केंन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (**सीबीएसई**)) ने स्कूलों को **काउंसलर रखने की सलाह** दी है।

कोई विद्यार्थी स्वीकार नहीं करेगा कि उसे तनाव है, लेकिन तनाव ही मनोरोग की जड़ है। कारण है कम्पटीशन - बोर्ड में अच्छे नंबर, इंजीनियरिंग या मेडिकल में प्रवेश, और स्कूल/ कॉलेज के बाद कोचिंग का।

कोचिंग वालों ने इलाज निकाल दिया कि वे बोर्ड परीक्षा की भी तयारी करवा देंगे, लेकिन स्कूल में पढ़ाई के अलावा स्पोर्ट्स, सांस्कृतिक कार्यक्रम, घूमने फिरने के टूर आदि विविध गतिविधियों का कुछ उद्देश्य होता है।

कोचिंग में यह सब सम्भव नहीं और छात्र समझते हैं कि उन्होंने टाइम बचा लिया, लेकिन सुबह से शाम तक केवल पढ़ाई जिन्दगी को नीरस बना देती है।

जीवन में बहुत से मील के पत्थर होते हैं। एक के बाद दूसरे की तैयारी में जुट जाना चाहिए। कोई लक्ष्य न मिले तो हम कुछ खो नहीं देते। इसका यह मतलब नहीं कि हम काबिल नहीं। हमें दूसरों से तुलना नहीं करनी चाहिए।

बचपन से "**अभय**" बनने की शिक्षा मिलनी चाहिए, घर से भी और स्कूल से भी। शिक्षा मिलती है - कथा, कहानियों से। भगवद्गीता के 16 वें अध्याय के पहले श्लोक का पहला ही शब्द है - "**अभयं**....जो 26 गुणों में से एक है।

तृप्ति ग्रोवर, PhD (AIIMS)
प्रबन्ध सम्पादक

With Best Compliments from-

Liberty Metal & Machines Pvt Ltd

Importers of pre-owned Conventional & CNC Machine Tools. Machines imported are in excellent working condition and can be tested at warehouse in Delhi.

www.libertyusedmachines.com
www.usedmachinesdelhi.com

LIBERTY

Email : info@libertymachines.in
rohit.jain@libertymachines.in
Call us at -09818275782, 09810073282
YouTube Channel - **Libertymachines**

कौन बनेगा करोड़पति

यह अमिताभ बच्चन के एक लोकप्रिय सीरियल का नाम है, किन्तु ऐसा कौन विद्यार्थी है, जो करोड़पति नहीं बनना चाहता। हमारी पढ़ाई का भी अन्तिम लक्ष्य यही है। ऐसे बहुत कम लोग हैं जो ज्ञान बढ़ाने के लिए पढ़ते हैं, क्योंकि इसमें उन्हें आनन्द आता है, और किसी परिणाम की चिन्ता नहीं होती।

लेकिन जब हम न चाहकर भी **परिणाम की अनिश्चितता** पर ध्यान देने लगते हैं तो गड़बड़ हो जाती है। कम नम्बर आने या फेल होने की आशंका, कम्पटीशन में असफल होने का डर, माता-पिता की उम्मीदें। इन बातों पर थोड़ा भी ध्यान गया तो तनाव जन्म लेता है। अब सोचिये यदि परिणाम की आशंकाओं पर ध्यान न देकर हम पढ़ाई को एन्जॉय करने लगे, पढ़ने में आनन्द आने लगे, तो **तनाव का भूत** भाग जायेगा।

मेहनत जरुरीहै, किन्तु पढ़ाई को कितना समय देना चाहिए, क्या बीच में ब्रेक होने चाहिये? ब्रेक का मतलब है दिमाग को आराम देने के लिए कुछ मनोरंजन, दस बीस मिनट घर वालों से गपशप, खुली हवा में टहलना या आँखें मूंदकर पांच मिनट लम्बी सांस यानि **डीप ब्रीदिंग** और **भ्रामरी प्राणायाम** करना वगैरह।

पढ़ाई के भी कुछ तरीके होते हैं और उनमें से एक है - **रीड, राइट, स्पीक**, मतलब पढ़ना, कुछ शार्ट नोट बनाने, और फिर किसी को सुनाना। वास्तव में जब आप किसी को पढ़ाते या कोई विषय समझाते हो तो, खुद को आत्मविश्वास जगता है कि मेरा यह पाठ पक्का हो गया।

परिणाम के बारे में क्यों न सोचें ? क्योंकि परिश्रम करना हमारे हाथ है, परिणाम नहीं - इसलिए अगर यह सोच बन जाये, तो सफलता की सम्भावना बढ़ जाती है। आजमा कर देख लीजिये।

चलो आई आई टी चलें

आसान नहीं, और बहुत आसान भी है। आसान नहीं, क्योंकि लगभग 15 लाख हर वर्ष भाग्य आजमाते हैं, और 15 हजार वहाँ पहुँचते हैं। योग्यता की बात करें तो शायद ही कोई ऐसा हो जिसमें योग्यता न हो। अब यहां लॉटरी समझ लीजिये। बात पुरानी है, मेरे एक दोस्त की इण्टर में सेकण्ड डिवीज़न थी, उसने IIT का नाम भी नहीं सुना था। जब दोस्तों से पता चला तो 1965 में BSc करते हुए उसने बिना कोचिंग के प्रयास किया और खड़गपुर में प्रवेश मिल रहा था, परन्तु घर वालों ने नहीं जाने दिया, कि घर से बहुत दूर है। अगले वर्ष फिर प्रयास किया तो कानपुर IIT में प्रवेश मिल गया।

एडमिशन का मतलब यह नहीं कि आप इंजीनियर बन गए। वहाँ हर क्लास टेस्ट, और परीक्षा कम्पटीशन है। पास मार्क्स फिक्स नहीं, रिलेटिव ग्रेडिंग सिस्टम है, और इसमें अगर लगातार दो सेमेस्टर का परफॉरमेंस इंडेक्स 4.0 या कम हो तो छुट्टी हो जाती है। यह तो **IIT का एजुकेशन सिस्टम** है, **इन्फोसिस** भी सिलेक्शन के बाद ट्रेनिंग देकर टेस्ट लेती है। तीन अवसर मिलते हैं, अगर उनके मापदंड़ पर खरे न उतरे तो निकाल देते हैं। इसलिए कहीं का भी लक्ष्य बनाने से पहले वहाँ की जानकारी होनी चाहिए। जो IIT या इन्फोसिस से निकाले जाते हैं, वे जिन्दगी में कहीं तो सफल होते हैं। **कारण है - हर व्यक्ति हर काम के लिए फिट नहीं। बिना सोचे समझे हम उधर चल पड़ते हैं, जिधर ज्यादा भीड़ हो।**

मिस्टर चौधरी बने IITian

यमुनानगर (हरियाणा) के किसी गाँव से हाई स्कूल पास करने के बाद मिस्टर **C S चौधरी** को माता-पिता ने एक फैक्ट्री में **क्लर्क** लगवा दिया। उनकी ड्यूटी **टाइम ऑफिस** में थी, जहाँ फैक्ट्री कर्मचारी अपना कार्ड जमा करते थे, जब हाजरी की बायोमीट्रिक तकनीक विकसित नहीं हुई थी। चौधरी ने कुछ फैक्ट्री वालों से दोस्ती कर ली और जानने की कोशिश की कि अन्दर क्या काम होता है, और उसे कैसे मौका मिल सकता है।

किसी मित्र ने सलाह दी कि पास के इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट (**ITI**) से शाम को पार्ट-टाइम ड्राफ्टमैन का कोर्स कर लो। ड्राफ्टमैन इंजीनियरिंग ड्राइंग बनाने का काम करते हैं। वजीरपुर, दिल्ली में टूल एंड डाई डिजाइन सेन्टर में ड्राफ्टमैन की वेकेन्सी निकली और **चौधरी साहब** टेक्निकल लाइन में प्रवेश कर गए। वहाँ काम करने वाले बहुत से ।T। पास कर्मचारी पीतमपुरा की आर्यभट्ट पॉलिटेक्निक से पार्ट-टाइम इंजीनियरिंग में डिप्लोमा कोर्स कर रहे थे, तो चौधरी साहब ने **मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा** कर लिया।

टेक्निकल पढ़ाई में मजा आने लगा तो जामिया मिलिया से पार्ट टाइम **B Tech** डिग्री हासिल कर ली। जॉब करते हुए पढ़ाई करना आसान नहीं होता, लेकिन मजा आने लगे तो कुछ मुश्किल नहीं। चौधरी साहब काफी समझदार हो गए थे, इसलिए **M Tech** करने का मन बनाया तो लक्ष्य था की यह डिग्री तो **IIT दिल्ली** से ही लेनी है। उस जमाने में वहाँ दो सीट पार्ट टाइम वालों के लिए होती थीं। सिलेक्शन इंटरव्यू द्वारा होता था (आजकल तो इसकी भी परीक्षा होती है), अप्लाई कर दिया और लगभग पचास-साठ आवेदकों में से **चौधरी साहब** चुन लिये गए।

कल्पना कीजिये, जिसको न **इंजीनियरिंग** विषय की जानकारी थी और न उसने **IIT** का नाम सुना था, वह व्यक्ति मानेसर (गुरुग्राम) में एक प्रसिद्ध ऑटोमोबाइल पार्ट्स बनाने वाली कम्पनी **ASK ऑटोमोबाइल्स लिमिटेड** में **वाईस प्रेजिडेंट (टेक्निकल)** के पद पहुँच गया। यह दर्शाता है, लगन और मेहनत के साथ सामान्य ज्ञान का कितना महत्व है। इंजीनियर बनने में रूचि है तो कोशिश करो **IIT** की, न मिले तो और बहुत से इंजीनियरिंग कॉलेज हैं - NIT, IISc, BITS Pilani, BE College Shibpur (University), Thapar Patiala etc

आज **IIT 23** हैं तो इनकी भी जानकारी होनी चाहिए। बहुत लोग नहीं जानते होंगे कि **IIT - मंडी** (हिमाचल प्रदेश) को **बेस्ट यूनिवर्सिटी ऑफ़ दी ईयर** अवार्ड मिला है, और **IIT मद्रास** (चेन्नई) ने निर्णय लिया है कि तीन वर्ष की पढ़ाई के बाद कोई छोड़ना चाहे तो उसे **BSc (इंजीनियरिंग)** डिग्री मिलेगी। इसका फायदा उनको है जो **IAS**, **MBA** आदि की तैयारी करना चाहते हैं, या जिनको परिवार के व्यवसाय से जुड़ना है।

अनिल मणिभाई नाइक

लार्सन एंड टूब्रो, जिसे **L&T** के नाम से जाना जाता है, भारत की एक बहुराष्ट्रीय (MNC) कंपनी है। जब हम छात्रों को अखबार पढ़ने की सलाह देते हैं तो उद्देश्य है उन्हें उद्योग जगत की जानकारी मिले। परन्तु समाचार पत्रों में काम की खबरें कम, क्राइम, धोखाधड़ी, सड़क दुर्घटना, और भ्रष्टाचार की बातें अधिक होती हैं। इस लिए हम **उद्योग संचेतना** में केवल उद्योग, व्यवसाय और स्वरोजगार से जुड़ी जानकारी निःशुल्क उपलब्ध कराते हैं।

जनरल नॉलेज की बात करें तो प्रतिष्ठित अयोध्या राम मंदिर का निर्माण **लार्सन टूब्रो (L&T)** ने किया है। यह कम्पनी क्या काम करती है, कहाँ - कहाँ इसके प्लांट हैं, इसका बिज़नेस कितना बड़ा है, किसने इसे स्थापित किया, कौन

लोग इसे चलाते हैं, वगैरह। मार्च 2025 को समाप्त वित्त वर्ष में कम्पनी ने ₹2,55,734 करोड़ का व्यापार किया और ₹17,673 करोड़ लाभ कमाया। भारत के दस बड़े व्यापारिक प्रतिष्ठानों में **L&T दसवें स्थान पर** है, लेकिन **इंजीनियरिंग और कंस्ट्रक्शन क्षेत्र में इसका पहला नम्बर है**।

1942 में गुजरात में जन्मे अनिल मणिभाई नाइक स्वतंत्रता सेनानी शिक्षक मणिभाई निचाभाई नाइक के पुत्र हैं, जिन्होंने ग्रामीण भारत में योगदान देने के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी। अनिल ने **नेस्टर बॉयलर्स** से नौकरी शुरु की, क्योंकि शुरुआत में L&T ने उन्हें रिजेक्ट कर दिया था। L&T उन दिनों केवल IIT इंजीनियरों को प्राथमिकता देती थी, लेकिन 1965 में अनिल मणिभाई नाइक ने L&T में जूनियर इंजीनियर पद पर **₹670** मासिक वेतन से अपनी पारी शरू की। कल्पना कीजिये एक जूनियर इंजीनियर 1999 में कम्पनी के चीफ एग्जीक्यूटिव अधिकारी CEO बने और जुलाई 2017 में अध्यक्ष (Chairman) बन गए।

उनके नेतृत्व में, L&T डिफेंस, इंफ्रास्ट्रक्चर और टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में भारत की सबसे बड़ी निर्माण कंपनी बन गई। 30 सितंबर 2023 को वे L&T की कमान से पूरी तरह मुक्त हुए, जो एक 58 साल के सुनहरे कैरियर की पूर्णाहूति थी। उनके नेतृत्व में L&T की तरक्की का ग्राफ लगातार ऊपर चढ़ता गया। नाइक ने अलग-अलग क्षेत्रों में L&T के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मौजूदा वक्त में एलएंडटी का 90% रिवेन्यु उन कारोबार से आता है, जिसे नाइक ने शुरू किया था. सादगी पसंद नाइक दिखावा बिल्कुल नहीं करते।

2017-18 में नाइक का वेतन 137 करोड़ और नेटवर्थ 400 करोड़ रुपए थी। वर्ष 2016 में उन्होंने अपनी 75 प्रतिशत संपत्ति दान कर दी और कहा कि यदि उनके बेटे-बहू भारत नहीं लौटे, तो वह अपनी 100 फीसदी संपत्ति दान कर देंगे। नाइक अपनी संपत्ति का अधिकांश हिस्सा स्कूल-अस्पताल की चैरिटी पर खर्च करते हैं। वर्ष 2022 में उन्होंने 142 करोड़ रुपए दान में दिए।

भारत में इंजीनियरिंग शिक्षा में IIT की महत्वपूर्ण भूमिका है, किन्तु लगन और ईमानदारी से परिश्रम करने वाला इंजीनियर किसी भी कॉलेज में पढ़ाई करे - महान बन सकता है ----------

---

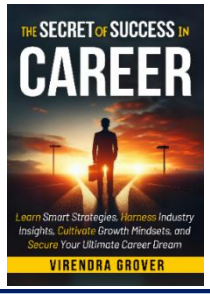

Purchase the book online at – https://secret-success-career/

Get special discount, with **FREE shipping** by paying **Rs 250/-** through **QR Code**,

Email proof of payment and address to

ispatbharti@gmail.com

सम्पादन सहयोग - अनुभूति सचदेवा, ईशान चोपड़ा

उच्च शिक्षा के बाद भी रोज़गार के सीमित अवसर होने के कारण शिक्षित युवाओं में बेरोजगारी और अनिश्चितता बनी रहती है। इस समस्या का समाधान करने में उद्योग संचेतना का प्रयास है - कैरियर मार्गदर्शन। यह सेवा गाजियाबाद के विद्यालयों के निःशुल्क है। सम्पर्क करें – ispatbharti@gmail.com

DISCLAIMER: Contents in this eNewsletter are not for commercial or business use